ऋचा शर्मा

ई-मेल-richasharma1168@gmail.com

भँवर

रोज की तरह वह बस स्टैंड पर आ खड़ी हुई। शाम छः बजे की बस में यहीं से बैठती है। काम निपटाकर सुबह पाँच बजे वापस आ जाती है। बस अभी तक नहीं आई। आज घर से निकलते समय ही मन बेचैन हो रहा था। मिनी बड़ी हो रही है। रंग भी निखरता जा रहा है। दूसरी माँएँ अपनी लड़की की सुंदरता देख खुश होती हैं, वह डरती है। आज निकलते समय पास का ढाबेवाला मुस्कुराकर बोला – "तेरी लड़की बड़ी हो गई है अब।" उसने अनसुना तो कर दिया पर गर्म लावे-सा पड़ा था कानों में यह वाक्य। मन में उथल-पुथल मच गई – 'इस तरह क्यों बोला वह मिनी के बारे में? कहीं इसकी नजर तो मिनी पर...? इसे मेरे बारे में कुछ पता तो नहीं चल गया? मिनी को इस नरक में ना ढकेल दे कोई।'

आज बस क्यों नहीं आ रही है? वह बेचैन हो रही थी। इतने साल हो गए यह काम करते हुए, पता नहीं आज मन अतीत क्यों कुरेद रहा है? घरवाले ने साथ दिया होता तो यह नरक ना भोगना पड़ता। ना मालूम कहाँ चला गया दुधमुँही बच्ची को गोद में छोड़कर। बच्ची को लेकर दर-दर की ठोकरें खाती रही। गोद में बच्ची को देखकर कोई मजदूरी भी नहीं देता था। खाने के लाले पड़ गए थे उसके। मरती क्या ना करती? आँसू टपक पड़े। हमारी जैसी औरतों के आँसुओं का कोई मोल नहीं? पुरुष यहाँ से भी बेदाग निकल जाता है, कड़वाहट भर गई मन में, वहीं थूक दिया उसने।

देर हो रही है, मालिक आफत कर देगा। तभी बस आती दिखाई दी, उसने राहत की साँस ली। बस में चढ़ने के लिए एक पैर रखा ही था कि उसके दिमाग में ढाबेवाले का वाक्य फिर से गूंजने लगा –"तेरी लड़की बड़ी हो गई है अब।"... क्या करूँ? मिनी अकेली है घर में। हर पल, एक भँवर है? एक पैर अभी नीचे ही था, वह झटके से बस से उतर गई।

देखनेवाले हैरान थे इतनी देर से बस का इंतजार कर रही थी, इसे क्या हुआ।

एक बदहवास माँ अपने घर की ओर दौड़ी जा रही थी।